International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

गुप्तकालीन मंदिर वास्तु में गंगा-यमुना का अंकन

डॉ. रश्मि झारिया

सहायक प्राध्यापक-इतिहास विभाग, शासकीय महाविद्यालय कुंडम, जिला-जबलपुर (म.प्र.)

शोध सार:
भारतीय कला धर्म से अनुप्राणित है। वैदिक युग से ही कला के समस्त पक्षों में धार्मिक भावनाओं का समावेश हुआ है। गुप्तकाल धर्म के पुनरुत्थान और समन्वय में विशेष महत्व रखता है। यहीं से मूर्तिकला अपने कलात्मक स्वरूप के विभिन्न चरणों से गुजरते हुए लावण्यता, माधुर्यता तथा शालीनता को अपने में समेटे हुए परिपूर्ण और परिष्कृत हो गई।
गुप्तकालीन मंदिर वास्तुकला भारतीय कला इतिहास का एक महत्वपूर्ण चरण है, जिसमें मंदिर निर्माण की परिपक्व परंपरा विकसित हुई। तत्कालीन भारत की दो पुण्यासलिलाओं गंगा और यमुना का गर्भगृह के प्रवेश द्वार पर मानव रूप में अंकन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह अंकन केवल सजावटी नहीं था, बल्कि धार्मिक प्रतीकात्मकता से जुड़ा था। गंगा और यमुना भारतीय संस्कृति में जीवनदायिनी और शुद्धिकरण की शक्ति का प्रतीक हैं। मंदिर के द्वार पर इनका अंकन इस विचार को पुष्ट करता है कि गर्भगृह में प्रवेश करने वाला भक्त पहले पवित्रता और शुद्धता से युक्त हो। उल्लेखनीय है कि मंदिर का द्वार एक तीर्थ के रूप में देखा जाता था, जहाँ से गुजरना नदी स्नान के समान शुद्धिकरण का अनुभव देता है।
मकरवाहिनी गंगा और कूर्मवाहिनी यमुना ये दोनों नदी देवियों का त्रिभंग मुद्रा में, हाथ में कलश और सहचर स्त्रियों के साथ गुप्तकालीन मंदिरों जैसे दशावतार मंदिर, देवगढ़, भूमरा शिव मंदिर और तिगवां विष्णु मंदिर में अंकन गुप्तकाल में इन दोनों नदियों के महत्व को इंगित करता है।

मुख्य शब्द:- वास्तुकला, परिपक्व, गर्भगृह, मकर, कूर्म, त्रिभंग मुद्रा, सहचर, प्रतीकात्मकता, जीवनदायिनी, शुद्धिकरण, दशावतार, तिगवां, प्रतीकात्मक, अभिव्यक्ति।

प्रस्तावना: -
विश्व की प्रमुख संस्कृतियाँ नदियों के किनारे विकसित हुई भारत का प्राचीन इतिहास मुख्यतः सरस्वती, गंगा, यमुना और नर्मदा के तट का इतिहास है। नदियों के अध्ययन से भूगोल, समय समय पर बदलती राजनीतिक सीमाएं, धार्मिक एवं सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। नदियों को वैदिक काल से ही देवत्व प्राप्त हो गाय था।`प्राचीन ग्रंथों में नदी देवी गंगा को विष्णुपदी, भागीरथी, अलकनंदा, तथा मंदाकिनी एवं देवी यमुना को कालिंदी सूर्यातन्य आदि नामों से संबोधित कीय गया है।
भारतीय मूर्तिशिल्प में इन नदियों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है प्रतिमाओं के रूप में गंग- यमुना का अंकन मंदिर प्रवेश द्वारों के दोनों ओर गुप्तकाल से प्रारंभ किया। अनेक पौराणिक कथानकों से ज्ञात होता है की इन पवित्र नदियों में स्नान करने से शुद्धता प्राप्त होती है एवं नकारात्मक विचारों का अंत होता है। इसी अवधारणा का अनुसरण करते हुए गुप्तकालीन मंदिरों के प्रवेश द्वारों पर गंगा-यमुना का अंकन किया गया।
भारतीय शिल्पशास्त्रों एवं आगम ग्रंथों में इनके निर्माण संबंधी अनेक वर्णन प्राप्त होते हैं। अग्निपुराण के अनुसार जलदेवता वरुण के दाये पार्श्व में नदी देवी गंगा और बाये पार्श्व में नदी देवी यमुना को प्रदर्शित किया जाना चाहिए। इसमें वर्णित

वर्णननुसार गंगा चमर और पद्म धारण किए मकर पर आरूढ़ एवं यमुना नीलोत्पल एवं चमर धा रण किए कूर्म पर आरूढ़ होती हैं। डॉ कुसुम कुमारी जैसवाल के अनुसार गंगा यमुना की प्रतिमाएँ तीन प्रकार से निर्मित होती हैं वरुण के साथ ,द्वार पर देवी के रूप में एवं स्वतंत्र रूप में। भारतीय संस्कृतियों में पवित्र नदियों को हिन्दू पौराणिक कथाओं में देवियों के रूप में पूजा जाता है इस चित्रण को सदियों से भारतीय कला में सावधानीपूर्वक संरक्षित और पुनरव्याख्यायित किया गया है। गंगा और यमुना केवल पवित्रता और जीवन के प्रतीक ही नहीं है वे आध्यात्मिक मोक्ष के प्रतीक हैं। गंगा और यमुना नदियों का कलात्मक प्रतीकवाद समाज और इन पवित्र नदियों के बीच विकसित होते संबंधों को दर्शाता है द्वारशाखा में इनका अंकन अन्य अलंकार्नो के साथ होना मंदिर प्रवेश से पूर्व जल से पवित्र एवं शुद्ध होने की भावना से प्रेरित है। द्वार के चौखट पर गंगा यमुना का सुशोभित होना गुप्तकालीन कला की एक उल्लेखनीय विशेषता है विचारणीय है की ये प्रवृत्ति हिन्दू एवं बौद्ध (उदयगिरी ,अजंता) में समान रूप से प्राप्त है
है।

गंगा-यमुना (प्रतीकात्मक और धार्मिक अर्थ)

भारतीय संस्कृति और धर्म में गंगा और यमुना मात्र दो नदियां नहीं हैं, बल्कि ये आध्यात्मिकता, ज्ञान और जीवन की सर्वोच्च शुद्धता के प्रतीक हैं। हिंदू धर्म में इन्हें देवी के रूप में पूजा जाता है, जो पापों को नष्ट करने वाली, मोक्ष प्रदाता और चेतना की जागृति की प्रतीक हैं। गंगा को स्वर्ग (ब्रह्मलोक) से पृथ्वी पर अवतरित देवी माना जाता है। उनका प्रतीक शुद्धिकरण और पापों का नाश करना है।

हिंदू शास्त्रों (जैसे विष्णु पुराण और भागवत) के अनुसार, यमुना सूर्य देव की पुत्री और मृत्यु के देवता यमराज (यम) की जुड़वां बहन हैं। यमुना को भगवान कृष्ण की प्रिय और उनकी लीलाओं (जैसे रासलीला और बाल लीलाओं) की साक्षी माना गया है। इसलिए, उनका प्रतीकात्मक अर्थ अनन्य भक्ति और दिव्य प्रेम है। आध्यात्मिक रूप से, यमुना को धर्म, सक्रिय कर्म और आध्यात्मिक ऊर्जा की संयमित धारा माना जाता है।

द्वार-अलंकरण में गंगा-यमुना

वास्तुकला में द्वार-अलंकरण का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठित है। प्रवेश द्वार वह पहला माध्यम है जो दर्शक या उपासक को बाहरी दुनिया से जोड़कर किसी पवित्र स्थान (जैसे मंदिर का गर्भगृह) या भवन के भीतरी हिस्से में आमंत्रित करता है। भारतीय और पारंपरिक वास्तुकला में, मुख्य द्वार की सजावट के मुख्य स्थान द्वार की देहली (दहलीज) पर मांगलिक प्रतीकों जैसे स्वास्तिक, कलश और पदचिह्नों का अंकन किया जाता है। किसी भी शुभ कार्य में इसे सबसे पहले स्थापित और अलंकृत किया जाता है। द्वारों के ऊपरी हिस्से में तोरण लगाए जाते हैं। प्राचीन मंदिरों और स्मारकों (जैसे साँची के स्तूप) में तोरणों पर जातक कथाएँ और देवी-देवताओं की मूर्तियाँ उकेरी जाती हैं। गर्भगृह के द्वार की दो मुख्य शाखाओं (स्तंभों) पर देवी गंगा और यमुना की मूर्तियाँ उत्कीर्ण की जाती हैं। इसके साथ ही, द्वारपाल, मिथुन आकृतियाँ (शुभ प्रतीक) और बेल-बूटों की नक्काशी की जाती है। यह न केवल सौंदर्य बढ़ाता है, बल्कि उपासक को आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करके सर्वोच्च देवता के क्षेत्र में प्रवेश की अनुमति देता है। यद्यपि गंगा यमुना प्रतिमा का स्पष्ट अंकन द्वारपालिक के रूप में होता है तथापि ब्राम्हण धर्म में क्रमशः उत्थान के साथ कला में इसका व्यवहार बढ़ जाता है। गुप्तकाल भारतीय कला और स्थापत्य के इतिहास में एक विशिष्ट मोड़ है, क्योंकि इसी युग में मंदिर निर्माण की परंपरा ने परिपक्व रूप ग्रहण किया। इस काल के मंदिरों में केवल देव-प्रतिमा ही नहीं, बल्कि द्वार, चौखट, स्तंभ, और बाह्य दीवारों पर भी समृद्ध अलंकरण विकसित हुआ। विशेष रूप से मंदिरों के प्रवेशद्वार पर गंगा और यमुना की मूर्तियों का अंकन गुप्तकालीन शिल्प की एक प्रमुख पहचान बन गया। इन नदी-देवियों के माध्यम से मंदिर को पवित्र, मंगलकारी और संरक्षक स्वरूप प्रदान किया गया।

गंगा और यमुना का अंकन केवल सजावटी तत्व नहीं था, बल्कि उसके पीछे गहरी धार्मिक और सांस्कृतिक भावना थी। भारतीय परंपरा में गंगा को मोक्षदायिनी और यमुना को जीवनदायिनी नदी माना गया है। मंदिर के द्वार पर उनका चित्रण इस विश्वास का संकेत था कि देवालय में प्रवेश करने वाला व्यक्ति पहले शुद्धि, पवित्रता और मंगल के क्षेत्र से होकर भीतर जाए। इसीलिए गंगा-यमुना को प्रायः द्वारपाल-सी भूमिका में भी देखा जा सकता है, जो मंदिर की पवित्र सीमा की रक्षा करती हैं।
वास्तुशिल्प में ये दोनों नदियां इस बात का प्रतीक थीं कि मंदिर में प्रवेश करने वाला भक्त सांसारिक दोषों (यमुना द्वारा) को त्याग कर पवित्रता और ज्ञान (गंगा द्वारा) की ओर अग्रसर हो रहा है।

गुप्तकालीन मंदिरों में गंगा-यमुना अंकन

भारतीय कला और संस्कृति के इतिहास में गुप्त काल (4थी से 6ठी शताब्दी ईस्वी) को 'स्वर्ण युग' की संज्ञा दी जाती है। इस कालखंड में न केवल राजनीतिक सुदृढ़ता आई, बल्कि ललित कलाओं, साहित्य और विशेष रूप से मंदिर वास्तुकला का अभूतपूर्व विकास हुआ। गुप्त काल में नागर शैली की नींव पड़ी और ईंट व पत्थरों के स्वतंत्र मंदिरों का निर्माण शुरू हुआ। गुप्तकालीन वास्तुकला की सबसे विशिष्ट और युगांतरकारी विशेषताओं में से एक है—मंदिर के प्रवेश द्वार पर नदी देवियों, गंगा और यमुना का मूर्तिकला के रूप में अंकन।
प्रारंभिक भारतीय कला में द्वार-पालिकाओं या शालभंजिकाओं की परंपरा रही थी, परंतु गुप्त काल के कलाकारों ने इसे एक नया धार्मिक और दार्शनिक आयाम दिया। भौगोलिक रूप से गंगा और यमुना नदियाँ गुप्त साम्राज्य के मुख्य भूभाग (आर्यावर्त) का प्रतिनिधित्व करती थीं, जो राजनैतिक शक्ति और समृद्धि का प्रतीक थीं। दार्शनिक स्तर पर, मंदिर को 'पुरुष' या ब्रह्मांड का प्रतीक माना गया है, जहाँ गर्भगृह साक्षात् ईश्वर का निवास स्थान है। इस पवित्र स्थान में प्रवेश करने से पूर्व भक्त के मानसिक और शारीरिक शुद्धिकरण की आवश्यकता होती

देवगढ़ का दशावतार मंदिर –
तिगवां का कंकाली देवी (विष्णु) मंदिर –
भितरगांव का मंदिर –
एरण का विष्णु मंदिर –
भूमरा का शिव मंदिर –
नचना कुठारा का पार्वती मंदिर –
सांची का मंदिर संख्या 17 –

उदय गिरी की गुफा क्रमांक 6 में गंगा यमुना का अंकन -उदय गिरी में स्थित विशाल वराह प्रतिमा गुप्तकाल के मूर्तिकारों की प्रतिभा का एक स्मारक है इस विशाल प्रतिमा के दोनों ओर के दृश्य असाधारण महत्व के हैं जो गंगा और यमुना नदियों के स्वर्ग से अवतरण (जन्म), प्रयाग में उनके संगम और अंत में समुद्र में उनके प्रवाह का सजीव चित्रण प्रस्तुत करते हैं। यह पूरा दृश्य एक गीतात्मक भवन से ओत प्रोत हैं। और यह संभवतः मध्यदेश का एक आदर्श चित्रण प्रस्तुत कर्ता है जो गुपटों द्वारा स्थापित सांस्कृतिक साम्राज्य का केंद्र था इसके प्रतीक जुड़वा नदी देवियाँ गंगा और यमुना थी जो अपने अपने वाहनों मकर और कछुए पर विराजमान थी। गुप्त कला और इस काल के साहित्य में ही पहली बार मंदिर वस्तुकाल में इन दोनों नदियों का उल्लेख मिलता है और हम यह निष्कर्ष निकले बिना नहीं रह सकते की कालिदास द्वारा मंदिर के देवता की परिचारिकाओं के रूप में उनका स्पष्ट उल्लेख समकालीन कला की एक प्रमुख विशेषता की ओर इशारा कर रहा है "देवियों गंगा और यमुना ने दृश्य रूप धरण किया और हाथों में इबोरी लिए महान देवताओं की परिचारिकाओं के रूप में

विराजमान हुई। यह विशिष्ट विशेषता देवगढ़ मंदिर के द्वार पर सबसे कलात्मक रूप से चित्रित की गई है। इस काल में दोनों नदी देवियों की अलग अलग प्रतिमाएँ भी मिलती हैं।

निष्कर्ष: -

उपर्युक्त अध्ययनों और पुरातात्विक साक्ष्यों के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गुप्तकालीन मंदिर वास्तुकला में गंगा और यमुना का अंकन केवल सजावटी या सौंदर्यपरक तत्व नहीं था, बल्कि यह गहरे धार्मिक, राजनैतिक और आध्यात्मिक अर्थों को समेटे हुए था। वास्तुकला के क्रमिक विकास को देखें तो पता चलता है कि प्रारंभिक गुप्त काल में ये देवियाँ द्वार के ऊपरी छोर पर स्थित थीं, जो उत्तर गुप्त काल तक आते-आते द्वार के आधार पर स्थापित हो गईं, जिससे उनकी पूजा और दार्शनिक प्रासंगिकता अधिक मुखर हुई।

प्रवेश द्वार पर पूर्णकुंभ धारण किए इन देवियों की उपस्थिति भक्त को यह स्मरण कराती है कि ईश्वर के सामीप्य के लिए आंतरिक पवित्रता अनिवार्य है। साथ ही, यह अंकन गुप्त शासकों की अपनी पवित्र भूमि के प्रति निष्ठा और भू-राजनीतिक गौरव को भी रेखांकित करता है। गुप्त कलाकारों द्वारा पत्थरों और मिट्टी (टेराकोटा) पर उकेरी गई ये आकृतियाँ भारतीय मूर्तिकला के 'शास्त्रीय प्रतिमान' को स्थापित करती हैं। संक्षेप में, गुप्त काल में विकसित हुई यह द्वार-योजना इतनी सुदृढ़ और प्रभावशाली थी कि उत्तर भारत की आगामी नागर शैली और मध्यकालीन भारतीय मंदिरों में यह परंपरा एक अनिवार्य अंग बन गई। अतः, गुप्तकालीन कला में गंगा-यमुना का अंकन भारतीय कला इतिहास की एक युगांतरकारी और कालजयी धरोहर है।

संदर्भ: -

1. सिंघानिया नितिन, भारतीय कला और संस्कृति, मैकग्रा हिल एजुकेशन नोएडा, उत्तर प्रदेश 201301।
2. झा प्रो. डी. एन. और श्रीमाली प्रो. के. एम.,प्राचीन भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली – 110007।
3. शर्मा प्रो. रामशरण, प्राचीन भारत, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज,नई दिल्ली – 110002।
4. अग्रवाल डॉ. वासुदेव शरण, प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तुकला, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. दास डॉ. रायकृष्ण, भारतीय कला, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज।
6. उपाध्याय डॉ. भगवत शरण, कला और वास्तुकला के प्रमुख स्रोत, वाराणसी।
7. झा मनोज कुमार, गुप्तकालीन संस्कृत साहित्य एवं संस्कृति, कला प्रकाशन नई दिल्ली।
8. डॉ. रीता प्रताप, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास,राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
9. https://en.wikipedia.org/wiki/Dashavatara_Temple,_Deogarh
10. https://www.exoticindiaart.com/book/details/gupta-period-literature-and-culture-uav528/?srsltid=AfmBOoqmNKNWgROww3h_EnVvA4_TgwDzHtBSXt0JN7F_eDzeH216vC33NjQ